ANALYSIS BY DR.M PRASAD

1. उत्तर भारत में किस विश्वविद्यालय ने समाजशास्त्र के अध्यापन एवं शोध की पहल की?
   (1) पंजाब विश्वविद्यालय (2) दिल्ली विश्वविद्यालय
   (3) लखनऊ विश्वविद्यालय (4) आगरा विश्वविद्यालय

उत्तर: (3) लखनऊ विश्वविद्यालय

विश्लेषण:

लखनऊ विश्वविद्यालय को उत्तर भारत में समाजशास्त्र के अध्यापन और शोध की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता है। इस विश्वविद्यालय ने 1921 में समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित किया, जो भारतीय संदर्भ में समाजशास्त्र के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम था। यह पहल प्रोफेसर राधाकमल मुकर्जी और डी.पी. मुकर्जी जैसे विद्वानों के नेतृत्व में हुई, जिन्होंने भारतीय सामाजिक संरचना और संस्कृति के अध्ययन को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषित किया।

ऐतिहासिक संदर्भ: लखनऊ विश्वविद्यालय ने समाजशास्त्र को औपनिवेशिक भारत में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्थापित किया, जब सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने की आवश्यकता बढ़ रही थी। राधाकमल मुकर्जी ने भारतीय समाजशास्त्र को एक स्वदेशी दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसमें भारतीय परंपराओं, अर्थव्यवस्था, और सामाजिक संरचनाओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

पंजाब विश्वविद्यालय: यह समाजशास्त्र के क्षेत्र में बाद में सक्रिय हुआ और इसका योगदान लखनऊ के बाद आता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय: दिल्ली विश्वविद्यालय ने 1959 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की, जो लखनऊ से काफी बाद की बात है।

आगरा विश्वविद्यालय: इसने भी समाजशास्त्र को बाद में अपनाया, लेकिन यह लखनऊ की तरह अग्रणी नहीं था।

2. समाजशास्त्र के विकास का निम्नलिखित में से कौन सा आधार है?
   (1) राजनीतिक दर्शन (2) राजनीतिक व्यवस्था
   (3) राजनीतिक संघर्ष (4) राजनीतिक व्यवहार

उत्तर: (4) राजनीतिक व्यवहार

विश्लेषण:

समाजशास्त्र का विकास सामाजिक संरचनाओं, मानव व्यवहार, और सामूहिक गतिविधियों के अध्ययन पर आधारित है। इसमें राजनीतिक व्यवहार एक महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि यह सामाजिक समूहों और व्यक्तियों के बीच शक्ति, प्रभाव, और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है।

राजनीतिक व्यवहार का महत्व: समाजशास्त्र में राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन सामाजिक समूहों के बीच संबंधों, नेतृत्व, और शक्ति के वितरण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार को सामाजिक संदर्भों में विश्लेषित करता है, जैसे कि मतदान व्यवहार, सामाजिक आंदोलन, और नीति निर्माण।

राजनीतिक दर्शन: यह समाजशास्त्र से अधिक दर्शनशास्त्र से संबंधित है और सामाजिक तथ्यों के बजाय आदर्शों और सिद्धांतों पर केंद्रित है।

राजनीतिक व्यवस्था: यह समाजशास्त्र का एक हिस्सा हो सकता है, लेकिन यह समाजशास्त्र के विकास का मूल आधार नहीं है। यह समाजशास्त्र के अध्ययन का परिणाम है।

राजनीतिक संघर्ष: यह समाजशास्त्र का एक अध्ययन क्षेत्र है, लेकिन इसका दायरा राजनीतिक व्यवहार की तुलना में सीमित है।

सैद्धांतिक संदर्भ: मैक्स वेबर जैसे समाजशास्त्रियों ने शक्ति और प्रभुत्व (authority) के अध्ययन के माध्यम से राजनीतिक व्यवहार को समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।

3. किसने कहा कि “समाजशास्त्र सामूहिक व्यवहारों का विज्ञान है” ?
   (1) दुर्खीम (2) पार्क और बर्गेस
   (3) वेबर (4) बर्नार्ड

उत्तर: (2) पार्क और बर्गेस

विश्लेषण:

रॉबर्ट ई. पार्क और अर्नेस्ट डब्ल्यू. बर्गेस, जो शिकागो स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी के प्रमुख विद्वान थे, ने समाजशास्त्र को “सामूहिक व्यवहारों का विज्ञान” (science of collective behavior) के रूप में परिभाषित किया। उनकी यह परिभाषा समाजशास्त्र को सामाजिक

समूहों और उनके व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में स्थापित करती है।

पार्क और बर्गेस का योगदान: शिकागो स्कूल ने समाजशास्त्र में अनुभवजन्य शोध (empirical research) और सामाजिक प्रक्रियाओं, जैसे शहरीकरण, सामाजिक गतिशीलता, और सामूहिक व्यवहार, पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी पुस्तक Introduction to the Science of Sociology (1921) में इस परिभाषा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया।•

अन्य विद्वानों का दृष्टिकोण:

एमिल दुर्खीम: दुर्खीम ने समाजशास्त्र को "सामाजिक तथ्यों" (social facts) के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया, जो सामूहिक व्यवहार से भिन्न है।

मैक्स वेबर: वेबर ने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया (social action) के अध्ययन के रूप में देखा, जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों व्यवहार शामिलहैं।

बर्नार्ड: चेस्टर बर्नार्ड ने संगठन सिद्धांत पर अधिक ध्यान दिया ।

4. समाजशास्त्र की एक परिप्रेक्ष्य द्वारा पहचान है, जो निम्नलिखित में से किसको पूर्वभूमि में रखता है ?
   (1) विलक्षण सामाजिक घटनाएँ
   (2) सामाजिक अन्तःक्रिया
   (3) संस्कृति
   (4) व्यक्ति

उत्तर: (2) सामाजिक अन्तःक्रिया

विश्लेषण:

समाजशास्त्र का एक प्रमुख परिप्रेक्ष्य प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद (Symbolic Interactionism) है, जो सामाजिक अन्तःक्रिया को समाजशास्त्र के अध्ययन का केंद्र मानता है। यह परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों और समूहों के बीच प्रतीकों, अर्थों, और संचार के माध्यम से होने वाली अन्तःक्रियाओं पर जोर देता है।

प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद का आधार:जॉर्ज हर्बर्ट मीड, हर्बर्ट ब्लूमर, और अन्य समाजशास्त्रियों ने इस परिप्रेक्ष्य को विकसित किया। यह मानता है कि लोग प्रतीकों (जैसे भाषा, संकेत, और व्यवहार) के माध्यम से सामाजिक वास्तविकता का निर्माण करते हैं।

विलक्षण सामाजिक घटनाएँ: यह समाजशास्त्र का मुख्य फोकस नहीं है, क्योंकि समाजशास्त्र सामान्य सामाजिक पैटर्न पर ध्यान देता है।

संस्कृति: संस्कृति समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह कार्यात्मकतावाद (Functionalism) या सांस्कृतिक समाजशास्त्र जैसे परिप्रेक्ष्यों में अधिक प्रासंगिक है।

व्यक्ति: समाजशास्त्र व्यक्तियों के बजाय सामाजिक समूहों और संरचनाओं पर केंद्रित है।

5. कौन, समाज की अवधारणा को सामाजिक व्यवस्था से बदलना चाहते हैं?
   (1) एंथोनी गिडिंग्स (2) रॉबर्ट बीरस्टीड
   (3) टी. पारसन्स (4) एच. मार्कूज

उत्तर: (3) टी. पारसन्स

विश्लेषण:

टी. पारसन्स, एक प्रमुख **कार्यात्मकतावादी (Functionalist) समाजशास्त्री,** ने समाज की अवधारणा को सामाजिक व्यवस्था (social system) के रूप में परिभाषित करने पर जोर दिया। उनकी पुस्तक The Social System (1951) में उन्होंने समाज को एक जटिल सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा, जिसमें विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ, भूमिकाएँ, और मानदण्ड एक-दूसरे के साथ संतुलन बनाए रखते हैं।

पारसन्स का दृष्टिकोण: पारसन्स ने सामाजिक व्यवस्था को एक ऐसी संरचना के रूप में परिभाषित किया, जो सामाजिक स्थिरता और एकीकरण को बनाए रखने के लिए कार्य करती है। उनके AGIL मॉडल (Adaptation, Goal Attainment, Integration, Latency) में सामाजिक व्यवस्था के चार कार्यों को विस्तार से समझाया गया है।

एंथोनी गिडिंग्स: गिडिंग्स ने सामाजिक संरचना पर जोर दिया, लेकिन सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा को पारसन्स की तरह परिभाषित नहीं किया।

रॉबर्ट बीरस्टीड: बीरस्टीड ने सामाजिक संरचना और शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया, न कि सामाजिक व्यवस्था पर।

एच.मार्कूज: मार्कूज एक नव-मार्क्सवादी विचारक थे, जिन्होंने सामाजिक व्यवस्था की जगह पूंजीवादी संरचनाओं की आलोचना पर ध्यान दिया।

6. समाज की विशेषताएँ – निश्चित भूक्षेत्र, संतति, संस्कृति और स्वावलम्बन आदि किसने बताई है ?
(1) मैकाइवर (2) एफ. टॉनीज
(3) हेरी एम. जॉनसन (4) किंग्सले डेविस

उत्तर: (1) मैकाइवर

विश्लेषण:

रॉबर्ट मैकाइवर और उनके सहयोगी सी.एच. पेज ने अपनी पुस्तक Society: An Introductory Analysis में समाज की विशेषताओं को परिभाषित किया। उन्होंने समाज को एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा, जिसमें निश्चित भूक्षेत्र, संतति (जनसंख्या), संस्कृति, और स्वावलम्बन जैसी विशेषताएँ शामिल हैं।

मैकाइवर का योगदान: मैकाइवर ने समाज को एक जटिल सामाजिक इकाई के रूप में परिभाषित किया, जिसमें सामाजिक संबंधों और संरचनाओं का एक निश्चित ढाँचा होता है। उनकी परिभाषा में निम्नलिखित शामिल हैं:

निश्चित भूक्षेत्र: समाज का एक भौगोलिक आधार होता है।

संतति: समाज में लोगों का समूह होना आवश्यक है।

संस्कृति: साझा मूल्य, मानदण्ड, और परंपराएँ।

स्वावलम्बन: समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता।

एफ.टॉनीज: टॉनीज ने गेमाइनशाफ्ट (Gemeinschaft) और गेसेलशाफ्ट (Gesellschaft) की अवधारणाओं पर काम किया, लेकिन समाज की विशेषताओं को इस तरह परिभाषित नहीं किया।

• **हेरी एम. जॉनसन:** जॉनसन ने समाजशास्त्र के सैद्धांतिक पहलुओं पर लिखा।

किंग्सले डेविस: डेविस ने जनसंख्या और सामाजिक संरचना पर काम किया।

7. सुमेलित करें :

सूची –I		**सूची – II**
(a)	उप-संस्कृति	1. हिप्पी
(b)	विपर्यय संस्कृति	2. भाषा
(c)	संस्कृति का वाहन	3. सेना
(d)	संस्कृति टकराव	4. अयोध्या मन्दिर आन्दोलन

विकल्पः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	4	2	3	1
(2)	1	2	3	4
(3)	3	1	2	4
(4)	1	4	2	3

विश्लेषण:

(a) (1) **उप-संस्कृति (subculture)** एक बड़े सांस्कृतिक समूह के भीतर एक छोटा समूह होता है, जो अपनी विशिष्ट मान्यताओं और व्यवहारों से पहचाना जाता है। हिप्पी **1960-70** के दशक में एक उप-संस्कृति के रूप में उभरे, जो शांति, प्रेम, और वैकल्पिक जीवनशैली पर केंद्रित थे।

(b) विपर्यय संस्कृति–अयोध्या मन्दिर आन्दोलन (4) विपर्यय संस्कृति (counterculture) मुख्यधारा की संस्कृति के खिलाफ विद्रोह करती है और उसे बदलने की कोशिश करती है। अयोध्या मन्दिर आन्दोलन ने मुख्यधारा की धर्मनिरपेक्ष संस्कृति को चुनौती दी और धार्मिक-राजनीतिक परिवर्तन की मांग की।

(c) संस्कृति का वाहन – भाषा (2) भाषा संस्कृति का एक प्रमुख वाहन (vehicle) है, क्योंकि यह मूल्यों, मान्यताओं, और परंपराओं को व्यक्त और संरक्षित करती है।

(d) संस्कृति टकराव – सेना (3) संस्कृति टकराव (cultural conflict) तब होता है जब दो भिन्न सांस्कृतिक समूहों के मूल्य और मानदण्ड आपस में टकराते हैं। **सेना** में विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग एक साथ काम करते हैं, जिससे सांस्कृतिक टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

8. एक संस्था _____ से बनती है।
(1) कर्ताओं एवं समूहों (2) नियमों एवं विधियों
(3) मूल्यों एवं मानदण्डों (4) उपर्युक्त सभी

विश्लेषण:

सामाजिक संस्थाएँ (social institutions) समाज की आधारभूत संरचनाएँ होती हैं, जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखती हैं। ये निम्नलिखित तत्वों से निर्मित होती हैं:

कर्ता और समूह: संस्थाएँ व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार से बनती हैं, जो सामाजिक भूमिकाएँ निभाते हैं।

नियम और विधियाँ: संस्थाएँ नियमों और विधियों द्वारा संचालित होती हैं, जो सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

मूल्य और मानदण्ड: संस्थाएँ साझा मूल्यों और मानदण्डों पर आधारित होती हैं, जो सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करते हैं।

उदाहरण: परिवार, शिक्षा, और धर्म जैसी संस्थाएँ इन सभी तत्वों का समन्वय हैं।

9. सुमेलित कीजिए:

सूची –I	**सूची – II**
I अन्तर्समूह	1. आमने-सामने का सम्बन्ध
II बाह्य समूह	2. वे समूह
III लघु समूह	3. हम समूह
IV प्रारम्भिक समूह	4. द्विव्यक्ति

विकल्पः

	I	II	III	IV
(1)	1	4	2	3
(2)	4	3	1	2
(3)	3	2	4	1
(4)	4	1	2	3

विश्लेषण:

I. अन्तर्समूह – हम समूह (3):अन्तर्समूह (in-group) वे समूह हैं, जिनसे व्यक्ति अपनी पहचान और निष्ठा जोड़ता है, जैसे परिवार या मित्र समूह। इन्हें "हम समूह" कहा जाता है।

II. बाह्य समूह – वे समूह (2):बाह्य समूह (out-group) वे समूह हैं, जिनसे व्यक्ति का संबंध नहीं होता और जिन्हें वह "वे" के रूप में देखता है।

III. लघु समूह – द्विव्यक्ति (4):लघु समूह (small group) सीमित संख्या के व्यक्तियों का समूह होता है, जैसे द्विव्यक्ति (dyad), जिसमें दो लोग शामिल होते हैं।

IV. प्रारम्भिक समूह – आमने-सामने का सम्बन्ध (1):प्रारम्भिक समूह (primary group), जैसे परिवार, मित्र, आदि, व्यक्तिगत और आमने-सामने के संबंधों पर आधारित होते हैं।

10. निम्न में से कौन सा सामुदायिक जीवन का आधार नहीं है ?
(1) सामान्य भू-भाग
(2) सामान्य चिन्तन
(3) सामुदायिक भावना
(4) सामान्य जीवन निर्वाह का तरीका

विश्लेषण:

सामुदायिक जीवन (community life) के लिए निम्नलिखित आधार आवश्यक हैं:

सामान्य भू-भाग: समुदाय का एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है।

सामुदायिक भावना: समुदाय के सदस्यों में "हम" की भावना होती है।

सामान्य जीवन निर्वाह का तरीका: समुदाय साझा जीवन शैली और संस्कृति पर आधारित होता है।

सामान्य चिन्तन: यह सामुदायिक जीवन का आधार नहीं है, क्योंकि समुदाय के सदस्यों के विचार भिन्न हो सकते हैं, लेकिन उनकी सामुदायिक भावना और साझा जीवन शैली उन्हें एकजुट रखती है।

11. निम्नांकित में से कौन सा भारत में क्षेत्रवाद को जन्म देने वाला कारक है ?
(1) शिक्षा का विस्तार
(2) बेकारी की समस्या
(3) क्षेत्रीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानना
(4) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (4) उपर्युक्त सभी

विश्लेषण:

क्षेत्रवाद (Regionalism) भारत में एक सामाजिक और राजनीतिक घटना है, जो विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है। ये कारक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताओं को दर्शाते हैं।

शिक्षा का विस्तार: शिक्षा के प्रसार ने क्षेत्रीय भाषाओं, संस्कृतियों और पहचानों को बढ़ावा दिया, जिससे क्षेत्रीय चेतना और क्षेत्रवाद को बल मिला।

बेकारी की समस्या: बेरोजगारी और आर्थिक असमानता ने क्षेत्रीय असंतोष को बढ़ाया, जैसे कि "स्थानीय बनाम बाहरी" के आंदोलन।

क्षेत्रीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानना: क्षेत्रीय संस्कृति और भाषा को श्रेष्ठ मानने की भावना ने क्षेत्रवाद को और मजबूत किया, जैसे कि दक्षिण भारत में तमिल या पूर्वोत्तर में असमिया पहचान।

12. निम्नांकित में से कौन सा कारक भ्रष्टाचार के लिए उत्तरदायी नहीं है ?
    (1)स्वार्थ की पूर्ति
    (2) नियम-कानूनों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी
    (3) अत्यधिक प्रतिस्पर्धा
    (4) उच्च अधिकारियों का सहयोग

उत्तर: (2) नियम-कानूनों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी

विश्लेषण:

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या है, जो विभिन्न कारकों से उत्पन्न होती है।

स्वार्थ की पूर्ति: व्यक्तिगत लाभ की इच्छा भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है।

अत्यधिक प्रतिस्पर्धा: संसाधनों और अवसरों के लिए प्रतिस्पर्धा भ्रष्ट प्रथाओं को बढ़ावा देती है।

उच्च अधिकारियों का सहयोग: भ्रष्टाचार में उच्च अधिकारियों की संलिप्तता इसे और बढ़ाती है।

नियम-कानूनों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी: यह भ्रष्टाचार का कारण नहीं है, बल्कि यह पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा दे सकता है।

13. संस्थाओं का परिवर्धमान संस्थाओं तथा अधिनियमित संस्थाओं में वर्गीकरण दिया है
    (1) जॉर्ज सिमेल ने (2) स्पेन्सर ने
    (3) समनर ने (4) पारसन्स ने

उत्तर: (3) समनर

विश्लेषण:

विलियम ग्राहम समनर ने सामाजिक संस्थाओं को **परिवर्धमान संस्थाएँ (Crescive Institutions) और अधिनियमित संस्थाएँ** (Enacted Institutions) में वर्गीकृत किया।

परिवर्धमान संस्थाएँ: ये संस्थाएँ धीरे-धीरे सामाजिक प्रथाओं और परंपराओं से विकसित होती हैं, जैसे कि परिवार और धर्म।

अधिनियमित संस्थाएँ: ये संस्थाएँ औपचारिक रूप से बनाई जाती हैं, जैसे कि सरकार और कानून।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

जॉर्ज सिमेल: सामाजिक अंतःक्रिया और समूह गतिशीलता पर ध्यान दिया।

स्पेन्सर: सामाजिक विकास और कार्यात्मकता पर काम किया।

पारसन्स: सामाजिक व्यवस्था और AGIL मॉडल पर केंद्रित।

महत्व: समनर का वर्गीकरण सामाजिक संस्थाओं के विकास और कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है।

14. "शीत युद्ध" एक उदाहरण है
    (1) वर्ग संघर्ष का (2) अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का
    (3) प्रत्यक्ष संघर्ष का (4) अप्रत्यक्ष संघर्ष का

उत्तर: (2) अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का

विश्लेषण:

शीत युद्ध (Cold War) 1947-1991 के बीच संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच एक वैश्विक तनाव था, जो सैन्य, वैचारिक, और आर्थिक प्रतिस्पर्धा पर आधारित था। इसे अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का उदाहरण माना जाता है।

विशेषताएँ: शीत युद्ध में प्रत्यक्ष सैन्य टकराव कम था, लेकिन हथियारों की होड़, प्रॉक्सी युद्ध, और वैचारिक संघर्ष प्रमुख थे।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

वर्ग संघर्ष: मार्क्सवादी सिद्धांत में वर्गों (जैसे पूंजीपति और मजदूर) के बीच संघर्ष।

प्रत्यक्ष संघर्ष: हिंसक और प्रत्यक्ष टकराव, जैसे युद्ध।

अप्रत्यक्ष संघर्ष: गैर-हिंसक, जैसे आर्थिक प्रतिबंध।

15. तकनीकी में तीव्र-वृद्धि तथा सामाजिक संस्थाओं और परम्परागत विश्वासों में धीमे परिवर्तन के सामंजस्य-विभेद को कहते हैं
(1) सांस्कृतिक विसरण
(2) सांस्कृतिक नवप्रवर्तन
(3) सांस्कृति विलम्बना
(4) सांस्कृतिक आत्मसात्करण

उत्तर: (3) सांस्कृति विलम्बना

विश्लेषण:

सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural Lag) की अवधारणा विलियम एफ. ओगबर्न ने दी, जो तकनीकी प्रगति और सामाजिक संस्थाओं या विश्वासों के बीच असंतुलन को दर्शाती है।

उदाहरण: औद्योगिक क्रांति के दौरान तकनीकी विकास तेजी से हुआ, लेकिन श्रम कानून और सामाजिक मानदण्ड धीरे-धीरे बदले।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

सांस्कृतिक विसरण: संस्कृतियों के बीच संपर्क से सांस्कृतिक तत्वों का प्रसार।

सांस्कृतिक नवप्रवर्तन: नई सांस्कृतिक प्रथाओं का निर्माण।

सांस्कृतिक आत्मसात्करण: एक संस्कृति का दूसरी में विलय।

महत्व: सांस्कृतिक विलम्बना सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को समझने में महत्वपूर्ण है।

16. देवर विवाह तथा साली विवाह उदाहरण हैं
(1) भ्रातक बहुपति प्रथा के (2) विनियम के प्रकार के
(3) अधिमान्य विवाह के (4) निषेध विवाह के

उत्तर: (3) अधिमान्य विवाह के

विश्लेषण:

देवर विवाह (levirate marriage) और साली विवाह (sororate marriage) अधिमान्य विवाह (preferential marriage) के उदाहरण हैं, जो कुछ समाजों में सामाजिक और पारिवारिक संरचनाओं को बनाए रखने के लिए प्रचलित हैं।

देवर विवाह: विधवा का अपने पति के छोटे भाई से विवाह।

साली विवाह: पत्नी की मृत्यु के बाद उसकी बहन से विवाह।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

भ्रातक बहुपति प्रथा: एक महिला का कई भाइयों से विवाह।

विनियम के प्रकार: सामान्य नियम, विवाह से संबंधित नहीं।

निषेध विवाह: निषिद्ध संबंध, जैसे निकट रिश्तेदारों से विवाह।

17. निम्न में से किसने जादू को विज्ञान की "अमान्य बहिन" कहा है
(1) मैलिनोवस्की (2) फ्रेजर
(3) रेडक्लिफ ब्राउन (4) टायलर

उत्तर: (2) फ्रेजर

विश्लेषण:

जेम्स जॉर्ज फ्रेजर ने अपनी पुस्तक **The Golden Bough में जादू को विज्ञान की "अमान्य बहिन" (illegitimate sister) कहा**, क्योंकि दोनों कारण-परिणाम के सिद्धांत पर आधारित हैं, लेकिन जादू वैज्ञानिक आधार के बजाय अंधविश्वास पर निर्भर करता है।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

मैलिनोवस्की: जादू और धर्म के सामाजिक कार्यों पर काम किया।

रेडक्लिफ ब्राउन: संरचनात्मक-कार्यात्मकता पर ध्यान दिया।

टायलर: एनिमिज्म और धर्म की उत्पत्ति पर काम किया।

18. 'तरवाड़' एक मातृवंशीय संयुक्त कुटुम्ब है, जो निम्नलिखित में से किस राज्य में पाया जाता है ?
(1) महाराष्ट्र (2) केरल
(3) असम (4) ओडिशा

उत्तर: (2) केरल

विश्लेषण:

'तरवाड़' (Tarwad) केरल के नायर समुदाय में पाया जाने वाला एक मातृवंशीय संयुक्त परिवार है, जिसमें संपत्ति और वंश माँ की रेखा से हस्तांतरित होता है।

विशेषताएँ: तरवाड़ में कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं, और संपत्ति का प्रबंधन मातृवंशीय नियमों के अनुसार होता है।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

महाराष्ट्र, असम, ओडिशा: इन राज्यों में मातृवंशीय व्यवस्था कम प्रचलित है।

19. सरकार का अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ देना उदाहरण है
(1) सकारात्मक भेदभाव का
(2) अधिमानी व्यवहार का
(3) सकारात्मक क्रिया का
(4) सराहनीय सेवा का

उत्तर: (3) सकारात्मक क्रिया का

विश्लेषण:

सकारात्मक क्रिया (Affirmative Action) ऐसी नीतियाँ हैं, जो सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों, जैसे अनुसूचित जाति और जनजाति, को समान अवसर प्रदान करने के लिए बनाई जाती हैं। भारत में छात्रवृत्तियाँ और आरक्षण इसका उदाहरण हैं।

अन्य विकल्पों का मूल्यांकन:

सकारात्मक भेदभाव: भेदभाव का सकारात्मक अर्थ नहीं होता।

अधिमानी व्यवहार: यह व्यक्तिगत पक्षपात को दर्शाता है।

सराहनीय सेवा: इसका सामाजिक नीति से संबंध नहीं है।

20. निम्नलिखित में से कौन सा तत्त्व किसी जाति को अनुसूचित जनजाति संवर्ग में सम्मिलित करने का निर्धारक तत्त्व नहीं है ?
(1) भौगोलिक एकाकीपन (2) समुदाय का आकार
(3) पिछड़ापन (4) विशिष्ट संस्कृति

उत्तर: (2) समुदाय का आकार

विश्लेषण:

भारत में अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes) को संविधान के तहत निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर शामिल किया जाता है:

भौगोलिक एकाकीपन: जनजातियाँ अक्सर दुर्गम क्षेत्रों में रहती हैं।

पिछड़ापन: सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन।

विशिष्ट संस्कृति: उनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान।

समुदाय का आकार: यह कोई मानदंड नहीं है, क्योंकि जनजाति का आकार बड़ा या छोटा हो सकता है।